तीसरी ताली में अस्तित्व का संकट

The distress of Existence in Teesri Taali

एम.फिल. हिंदी साहित्य की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-सारांश

शोधार्थी

स्वाति

पंजीयन सं.- 2015/02/215/001

शोध निर्देशक

प्रो. सूरज पालीवाल

प्रोफेसर

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा- 442001 (महाराष्ट्र)

दिसम्बर-2016

शोध-सारांश

सामान्यत: जब बच्चा भ्रूण में होता है तभी से माता-पिता अपने बच्चे के स्त्री या पुरुष लिंगी होने की चाह मन में पालने लगते हैं परंतु जब स्त्री गर्भ से होती है और ग्यारहवें सप्ताह में सेक्सुअल ऑर्गन्स को विकसित करने वाले हार्मोन्स अपनी भूमिका व्यवस्थित रूप से न निभा पाएं तो बच्चे का लैंगिक विकास पूर्ण रूप से नहीं हो पाता, जिसकी वजह से उसमें स्त्री और पुरुष दोनों के लक्षण आ जाते हैं। लैंगिक धरातल को कसौटी बनाकर हमारा समाज इस तरह के व्यक्ति को उपेक्षा के भाव से देखता है। जिसे हिजड़ा, किन्नर, तृतीय लिंग, थर्ड जेंडर, ट्रांसजेंडर इत्यादि नामों से जाना जाता है।

सुप्रीम कोर्ट द्वारा 15 अप्रैल 2014 को धारा 377 में संशोधन कर इन्हें कुछ अधिकार मुहैया कराए गए साथ ही इन्हें 'तृतीय लिंग' के रूप में समाज में अपनी पहचान भी दी गई, लेकिन बावजूद इसके इनकी स्थिति में आज भी कोई परिवर्तन देखने को नहीं मिल रहा है। अधिकार तो इन्हें मिल गए लेकिन सामाजिक स्वीकार्यता के अभी तक न मिलने पर उन अधिकारों का फलित होना असंभव ही प्रतीत होता है।

प्रदीप सौरभ कृत 'तीसरी ताली' वृहत्तर अर्थों में अस्मिता और पहचान के संकट से जूझते किन्नर समाज के व्यापक वर्ग की संघर्ष कथा है। जिसमें एक किन्नर बच्चे को लैंगिक विकलांगता के कारण घर से परित्यक्त करना, किन्नर समुदाय में जाकर उसके जीवन की घुटन, अपनी लैंगिक अस्मिता पाने की छटपटाहट, आजीविका के लिए संघर्ष, अनेक संघर्षों के बावजूद किन्नर समुदाय से निकले व्यक्ति का अपनी अलग पहचान पाना, व्यवस्था का उसे हाशियाकृत जीवन जीने के लिए अभिशप्त करना इत्यादि समस्याओं और संघर्षों को यथार्थ के धरातल पर उजागर किया गया है। साथ ही उपन्यास में सवाल है समाज का तृतीय लिंग के प्रति मानवीय होने का। समाज और परिवार उस बच्चे को अपनाए जो लैंगिक

विकृति का शिकार है। क्योंकि किन्नरों के पास घर से परित्यक्त होने के बाद जो मुख्य समस्या सामने आती है वो है आजीविका की समस्या। शिक्षण संस्थानों से इनके कट जाने के कारण इनसे रोजगार के अवसर भी छिन जाते हैं जिनके कारण इनके पास केवल अपना परंपरागत कार्य (बधाई मांगने) के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचता। 'तीसरी ताली' में आजीविका के संघर्ष के संदर्भ में एक और पहलु की ओर उपन्यासकार ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है जिसका आधार 'समलैंगिकता' है। वर्तमान समय में जब 'गे' संस्कृति को धारा 377 रद्द करके कानूनी स्वीकृति मिल गई है, ऐसे में किन्नर समाज को चुनौतीपूर्ण स्थितियों का सामना करना पड़ रहा है उनके सामने इससे भी आजीविका की समस्या उत्पन्न हो रही है क्योंकि 'गे' संस्कृति के चलन द्वारा लोगों का बच्चे पैदा करना बंद हो रहा है। जो किन्नरों के परंपरागत बधाई मांगने के कार्य को भी बट्टा लगा रहा है। ऐसे में व्यवस्था द्वारा भी इनके रोजगार के लिए कोई विशेष सुविधा सुनिश्चित नहीं की गई है, जिसके कारण किन्नर समुदाय बड़े-बड़े सेक्स रैकेट्स में शामिल हो रहे हैं और इनके लिए नाच-गाने की बजाय देह को बेचकर अर्थोपार्जन करना ज्यादा सरल हो गया है।

मेरे शोध विषय के अंतर्गत कदम-कदम पर तृतीय लिंग समुदाय के लिए सामाजिक स्वीकार्यता एवं अस्तित्व से संबंधित अनेक प्रश्नों को उठाया गया है जिसमें सर्वप्रथम परिवार से इस प्रश्न की पहल की गई है कि अगर माता-पिता शारीरिक व मानसिक विकलांग बच्चे को स्वीकार कर सकते हैं तो लैंगिक विकलांग बच्चे को क्यों नहीं स्वीकारते? इस समुदाय के व्यक्तियों में भी ढेरों प्रतिभाएं, कौशल इत्यादि मौजूद होते हैं, जिनका ये समुदाय कभी भी वाजिब कार्य के लिए उपयोग नहीं कर पाता। अगर माता-पिता ऐसे बच्चों को अपने स्नेह एवं सान्निध्य के साथ अन्य बालकों की तरह बड़ा करें तो जो हीनताबोध इनके अंदर किन्नर समुदाय में सबसे परित्यक्त होने के बाद जन्म लेता है वह कभी इससे ग्रसित नहीं हो पाएंगे।

मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने के नाते कहीं न कहीं उसके प्रति समाज का रवैया उसके आत्मविश्वास को भी निर्धारित करता है अगर इसी आत्मविश्वास की शुरूआत उस बालक के परिवार से ही हो जाए तो उसके आत्मविश्वास को आत्मनिर्भरता के पंख लगते देर नहीं लगेगी।

इसके साथ ही आज वर्तमान में अन्य विमर्शों की तरह किन्नर विमर्श की भी जरूरत है क्योंकि ये वे लोग हैं जिसे हमने ना केवल हाशिए पर ढकेल दिया है, बल्कि इनके साथ मानव की तरह व्यवहार तक नहीं करते। सबसे पहले जरूरत है इनके प्रति मानवीय आचरण की, तभी इन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा मिलेगी और यह वर्ग हाशिए से मुख्यधारा में आ पाएगा। यदि हम सही मायनों में आधुनिक होना चाहते हैं तो हमें अपनी जेंडर की जड़ हो चुकी परिभाषाओं को बदलना होगा। हर वो इंसान जो स्त्री या पुरुष जैसा नहीं है या स्त्री-पुरुष जैसा नहीं होना चाहता, उसे उसकी पहचान को खुद परिभाषित करने की स्वतंत्रता देनी होगी और साथ ही उस पहचान के साथ जीने का हौसला और हिम्मत भी। किन्नर भी स्त्री-पुरुष की ही तरह हमारे बीच का एक वर्ग है और उसकी भी अपनी काबिलियत हो सकती है। अतः हमें उसे भी समाज के मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्रयास करना चाहिए ताकि उसे आजीविका के लिए सेक्स रैकेट जैसे दलदल की ओर न भागना पड़े।

RESEARCH SUMMARY

Generally when the child is in womb parents develop a filling about the child being a male or female but when the women is pregnant and the hormones responsible for developing sexual organs may not the eleventh week : the complete sexual development does not take place and 'due to this the characteristics of both, male and female come in the child'. On sexual ground society neglects such person are called Hizara, Kinner, Third Gender, Transgender etc.

In an amendment by the supreme court in section 377 made on April 15, 2014 such person where given certain rights and where recognized as 'third sex' in the society. In spite of this no change in the conditions in seen even today. Although they have got rights yet in absence of social acceptance there rights as serve to fruitless .

Pradeep Saurabh's "Teesri Taali" in broader sense deals with the story of the class of eunuch struggling for their respects and recognition. In it the struggles and problems like dined of the child because of sexual disability, anxiety in the society and life of as a eunuch, restlessness to get a sexual identity and respect, struggle for eunuch, earning a recognition of a person of eunuch society after great struggle, cursing of society system to live a margins are presented on realistic ground, a part from it the novel raised a question regarding being human towards the third sex. Whether the society and family should accept such person who suffer from sexual abnormality the main problem before the eunuch that comes after being deserted by the family is of livelihood. Because they become devoid of schooling, they loose the chance of vocation and option is left for livelihood except the traditional way (singing songs of complements and blessings) the novelist in the novel "Teesri Taali" draws

our attention toward one more aspects in the context of struggle for bread & butter and that is 'homosexuality' in present scenario when the gay culture has got legal acceptance rejecting the section 377, the eunuch have to face a challenging situation. The bigger problem is that of livelihood because the gay culture is stopping the child birth this is also effecting the job of singing songs of blessing & complements in such situation no facility is provided to them for vocation by the system and because of this the eunuch are indulged in big sex rackets steed of singing and instead of singing and dancing, selling their bodies for bread and butter has become easier.

My research raises questions regarding the social acceptance and existence of the third gender. The question initiates with the family itself- if the family accepts the children with physical and mental abnormalities why not they accepts the children with sexual abnormality. The person of this society also have talents and intellect at a large scale of which this society not able to utilized if parents up bring these children with love and care like other children, the complex that develops in them after getting rejected because of being eunuch will not take place. Being a social animal, the attitude of the society decides the confidence of the person. If this confidence generated from the family only, it will take no time to transform this confidence into self dependency.

Today, like other discourses, the discourse of eunuch is necessary because they are such people whom we have not only pushed on margins but don't we have in a human way with them also the first requirement is of human behavior with them its only then they will get social respect and it will help this group of society bring to main stream of society from the margin. If we want to be modern in the real sense, we need to change to our definitions of gender that have becomes absolute. Every person, who

unlike a male or female or does not want to be given liberty define this recognition and in their own words and additional the courage and confidence to live with it. Eunuch to is a category among us like that of male and female and they too may have their own abilities should try connect them to the mainstream society so that it may not become a compulsion to indulge in evils like sex racket.